



International Journal of Advanced Research in Arts,  
Science, Engineering & Management (IJARASEM )

Volume 11, Issue 3, May-June 2024



INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA

**IMPACT FACTOR: 7.583**

# राजस्थान में खनिज संसाधन- स्थिति एवं महत्व

Goutam Chand Regar

M.A, Department of Geography, NET, B.Ed., Pali, Rajasthan, India

**सार:** सीसा, जस्ता, चांदी, जिप्सम, सोपस्टोन, बॉल क्ले, कैल्साइट, रॉक फॉस्फेट, फेल्डस्पार, काओलिन, कॉपर, जैस्पर, वोलास्टोनाइट आदि जैसे खनिजों के उत्पादन में राज्य का एकाधिकार है। राज्य को लिग्नाइट, कच्चे तेल और उच्च गुणवत्ता वाली गैस के विशाल संसाधनों पर गर्व है।

## I. परिचय

राजस्थान खनिज की दृष्टि से एक सम्पन्न राज्य है। राजस्थान को “खनिजों का अजायबघर” कहा जाता है। राजस्थान में लगभग 67(44 प्रधान + 23 लघु) खनिजों का खनन होता है। देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22 प्रतिशत है। खनिज भण्डारों की दृष्टि से झारखण्ड के बाद दूसरा स्थान है। खनिज उत्पादन की दृष्टि से झारखण्ड, मध्यप्रदेश के बाद राजस्थान का तिसरा स्थान है। खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखण्ड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवां स्थान है। देश की सर्वाधिक खाने राजस्थान में है। खनिजों में राजस्थान का प्रथम लौह खनिजों में राजस्थान का भारत में चतुर्थ स्थान है। राजस्थान में सर्वाधिक उपलब्ध खनिज रॉक फास्फेट है। राजस्थान जास्पर, बुलस्टोनाइट व गार्नेट का समस्त उत्पादन का एक मात्र राज्य है। सीसा जस्ता, जिप्सम, चांदी, संगमरमर, एस्बेस्टॉस, रॉकफास्फेट, तामड़ा, पन्ना, जास्पर, फायरक्ले, कैडमियम में राजस्थान का एकाधिकार है। चूना पत्थर, टंगस्टन, अभ्रक, तांबा, फेल्सपर, इमारती पत्थर में राजस्थान का भारत में महत्वपूर्ण स्थान है। राजस्थान में खनन होने वाले मुख्य खनिज निम्नलिखित हैं –[1,2,3]

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिज

सीसा-जस्ता

सीसा एवं जस्ता मिश्रित अयस्क गैलेना से निकलता है। इसके अलावा कैलेमीन, जिंकाइट, विलेमाइट, मुख्य अयस्क है। उदयपुर में जावर खान सीसा जस्ता और चांदी की देश की सबसे बड़ी खान है।

अन्य उत्पादक जिले

भीलवाड़ा – रामपुरा, आगुचा

राजसमंद – रजपुरा-दरीबा

स. माधोपुर – चैथ का बरवाड़ा

तांबा

तांबे के उत्पादन में राजस्थान का झारखण्ड के बाद दूसरा स्थान है।

खेतड़ी- सिंधाना (जिला झुंझनू) तांबे की देश की सबसे बड़ी खान है। यहां पर भारत सरकार का उपक्रम हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड स्थित है।

अन्य उत्पादक जिले

अलवर – खो-दरिबा, प्रतापगढ़

सिरोही – देलवाड़ा, केरावली

तांबे को गलाने पर उत्पाद के रूप में सल्फ्यूरिक एसिड प्राप्त होता है। जो सुपर-फास्फेट के निर्माण में प्रयुक्त होता है।

टंगस्टन

टंगस्टन बुलफ्रेमाइट अयस्क से प्राप्त होता है।

नागौर – डेगाना भाकरी गांव(रेवत पहाड़ी)

अन्य उत्पादक जिले

सिरोही – बाल्दा, आबूरोड

पाली – नाना कराब

सिरोही के बाल्दा में राजस्थान राज्य टंगस्टन विकास निगम द्वारा खनन कार्य किया जा रहा है।

मैगनीज

साइलामैलीन, ब्रोनाइट, पाइरोलुसाइट, मैगनीज के मुख्य अयस्क है।

बांसवाड़ा(सर्वाधिक भण्डार वाला जिला) – लीलवाना, तलवाड़ा, सागवा, तामेसर, कालाबूटा।

अन्य उत्पादक जिले

उदयपुर – देबारी, स्वरूपपुरा, नैगाडिया

राजसमंद – नाथद्वारा

लौह अयस्क

हेमेटाइट, मैग्नेटाइट, लिमोनाइट मुख्य अयस्क हैं। राजस्थान में हेमेटाइट किस्म का लोहा मिलता है।

जयपुर(सर्वाधिक भण्डार वाला जिला) – मोरीजा बानोल, चैमु, रामपुरा

अन्य उत्पादक जिले

उदयपुर – नाथरा की पाल, थुर-हुण्डेर

दौसा – नीमला राइसेला

अलवर – राजगढ़, पुरवा

झुंझुनू – डाबला-सिंघाना

राँक फास्फेट

देश का 90 प्रतिशत राँक फास्फेट राजस्थान में मिलता है। यह सुपर फास्फेट खाद व लवणीय भूमि के उपचार में काम आता है।

उदयपुर(सर्वाधिक) – झामर कोटड़ा, नीमच माता, बैलगढ़, कानपुरा, सीसारमा, भींडर

अन्य उत्पादक जिले

जैसलमेर – बिरमानिया, लाठी

सीकर – कानपुरा

बांसवाड़ा – सालोपत

RSMDC द्वारा झामर-कोटड़ा में राँक फास्फेट बेनिफिशिल संयंत्र लगाया गया है।

फ्रांस की सोफरा मांडिस ने राँक फास्फेट परिशोधन संयंत्र लगाने का प्रतिवेदन दिया है।

चूना पत्थर

यह सीमेंट उद्योग, इस्पात व चीनी परिशोधन में काम आता है।

यह राजस्थान में पाये जाने वाला सर्वव्यापी खनिज है।

चूना पत्थर तीन प्रकार का होता है।

केमिकल ग्रेड – जोधपुर, नागौर

स्टील ग्रेड – सानू(जैसलमेर), उदयपुर

सीमेंट ग्रेड – चित्तौड़गढ़, नागौर, बूंदी, बांसवाड़ा, कोटा, झालावाड़

अलवार – राजगढ़, थानागाजी

चित्तौड़गढ़(सर्वाधिक) – भैंसरोड़गढ़, निम्बोहेड़ा, मांगरोल, शंभुपुरा

अन्य उत्पादक जिले

बूंदी – लाखेरी, इन्द्रगढ़

उदयपुर – दरौली, भदोरिया

जैसलमेर – सानू, रामगढ़

नागौर – गोटन, मुडवा

जोधपुर – बिलाड़ा

अभ्रक

झारखण्ड, आंध्रप्रदेश के बाद राजस्थान का अभ्रक में तीसरा स्थान है।

ग्रेनाइट, पैग्मेटाइट इसके दो मुख्य अयस्क हैं।

सफेद अभ्रक को रूबी [4,5,6]अभ्रक, गुलाबी अभ्रक को बायोटाइट कहते हैं।

अभ्रक के चूरे से चादरें बनाना माइकेनाइट कहलाता है।

अभ्रक की ईंट भीलवाड़ा में बनती है।

भीलवाड़ा(सर्वाधिक) – दांता, टूंका, फूलिया, शाहपुरा, प्रतापपुरा

अन्य उत्पादक जिले

उदयपुर – चम्पागुढा, सरवाड़गढ़, भगतपुरा

थोड़ी बहुत मात्रा में अजमेर, जयपुर, बुंदी, सीकर, और डूंगरपुर में भी मिलता है।

जिप्सम

जिप्सम को सेलरवड़ी, हरसौंठ व खडिया मिट्टी भी कहते हैं।

जिप्सम का रवेदार रूप सैलेनाइट कहलाता है।

नागौर(सर्वाधिक) – भदवासी, मांगलोद, धांकोरिया

अन्य उत्पादक जिले

बीकानेर – जामसर(देश की सबसे बड़ी खान), पुगल, बिसरासर, हरकासर

जैसलमेर – मोहनगढ़, चांदन, मचाना

गंगानगर – सुरतगढ़, तिलौनिया

हनुमानगढ़ – किसनपुरा, पुरबसर

ऐस्बेस्टॉस

ऐस्बेस्टॉस देश में 90 प्रतिशत राजस्थान में मिलता है।

ऐस्बेस्टॉस को राँकवुल व मिनरल सिल्क भी कहते हैं।

यह सीमेंट के चादरें, पाइप, टाइल्स, बायलर्स निर्माण में काम आता है।

ऐस्बेस्टॉस की एम्फीबोलाइट और क्राइसोलाइट दो किस्में होती हैं।

राजस्थान में एम्फीबॉल किस्म मिलती है।

उदयपुर(सर्वाधिक) – ऋषभदेव, खेरवाड़ा, सलूमबर

अन्य उत्पादक जिले

राजसमंद – नाथद्वारा

डूंगरपुर – पीपरदा, देवल, बेमारू, जकोल

बुलस्टोनाइट

इसका खनन केवल राजस्थान में होता है।

यह पेंट, कागज व सिरेमिक उद्योग में काम आता है।

सिरोही – खिल्ला, बैटका

अन्य उत्पादक जिले

अजमेर – रूपनगढ़, पीसागांव

उदयपुर – खेड़ा, सायरा

डूंगरपुर – बोड़किया

बेन्टोनाइट

यह चीनी मिट्टी के बर्तनों पर पॉलिश करने, काँस्मेटिक्स और वनस्पति तेलों को साफ करने में उपयोग होता है। पानी में भिगोने पर यह फूल जाता है।

उत्पादक जिले –

बाड़मेर – हाथी की ढाणी, गिरल, अकाली

बीकानेर, सवाईमाधोपुर

फ्लोराइट या फ्लोर्सपार

यह चीनी मिट्टी के बर्तनों, सफेद सीमेंट लोह और अम्ल उद्योगों में काम आता है।

यह अभ्रक के साथ सहउत्पाद के रूप में निकलता है।

डूंगरपुर – माण्डों की पाल, काहिला

अन्य उत्पादक जिले

जालौर, सीकर, सिरोही, अजमेर

फ्लोर्सपार बेनिफिशियल संयंत्र(1956) मांडों की पाल

पत्रा या हरी अग्नि या मरकत या एमरल्ड

उदयपुर – काला गुमान, तीखी, देवगढ़

राजसमंद – कांकरोली

अजमेर – गुडास, राजगढ़, बुबनी

हाल ही में ब्रिटेन की माइन्स मैनेजमेण्ट कंपनी ने बुबानी(अजमेर) से गमगुढ़ा(राजसमंद) व नाथद्वारा तक फाइनग्रेड पत्रे की विशाल पट्टी का पता लगाया।

चीनी मिट्टी

यह सिरेमिक और सिलिकेट उद्योग में प्रयुक्त होती है। उत्तरप्रदेश के बाद चीनी मिट्टी के उत्पादन में राजस्थान का दुसरा स्थान है।

बीकानेर – चांदी, पलाना, बोटड़ी

अन्य उत्पादक जिले

सवाईमाधोपुर – रायसिना, वसुव

सीकर – पुरूषोत्तमपुरा, वूचर, टोरड़ा

उदयपुर – खारा- बारिया

चीनी मिट्टी धुलाई का कारखाना नीम का थाना(सीकर) में है।

गारनेट या तामड़ा या रक्तमणि

गारनेट का उत्पादन केवल राजस्थान में ही होता है। गारनेट जेम और ऐबरेसिब दो प्रकार होता है।

टोंक – राजमहल, कल्याणपुरा[7,8,9]

भीलवाड़ा – कमलपुरा, दादिया, बलिया-खेड़ा

अजमेर – सरवाड़, बरबारी

ग्रेनाइट

देश में राजस्थान ही एकमात्र ऐसा राज्य है जहां विभिन्न रंगों का ग्रेनाइट मिलता है।  
सर्वाधिक ग्रेनाइट जालौर में मिलता है।

अन्य उत्पादक जिले

गुलाबी – बाबरमाल(जालौर)

मरकरी लाल – सीवाणा, गुंगेरिया(बाड़मेर)

काला – कालाडैरा(जयपुर), बादनबाड़ा व शमालिया(अजमेर)

पीला – पीथला गांव(जैसलमेर)

नवीनतम भण्डार – बाड़मेर, अजमेर, दौसा

संगमरमर(मार्बल)

राजस्थान में भारत का 95 प्रतिशत संगमरमर मिलता है।

राजस्थान में कैल्साइटिक व डोलामाइटिक दो किस्में मिलती है।

संगमरमर के खनन में राजसमंद का प्रथम स्थान है।

राजसमंद – राजनगर, मोरवाड़, मोरचना, भागोरिया, सरदारगढ़ नाथद्वारा, केलवा

उदयपुर – ऋषभदेव, दरौली, जसपुरा, देवीमाता

नागौर – मकराना, कुमारी-डुंगरी, चैसीरा

सिरोही – सेलवाड़ा शिवगंज, भटाना

अलवर – खो-दरीबा, राजगढ़, बादामपुर

बांसवाड़ा – त्रिपुर-सुन्दरी, खेमातलाई, भीमकुण्ड

सफेद(कैल्साइटिक) – राजसमंद, मकराना

हरा-काला – डुंगरपुर, कोटा

काला – भैंसलाना

लाल – धौलपुर

गुलाबी – भरतपुर

हरा(सरपेन्टाइन) – उदयपुर

हल्का हरा – डुंगरपुर

बादामी – जोधपुर

पीला – जैसलमेर

सफेद स्फाटिकीय – अलवर

लाल-पीला छीटदार – जैसलमेर

सात रंग – खान्दरा गांव(पाली)

धारीदार – जैसलमेर

संगमरमर मण्डी – किशनगढ़

संगमरमर मूर्तियां – जयपुर

संगमरमर जाली – जैसलमेर

चांदी

राजस्थान में भारत की 90 प्रतिशत चांदी निकाली जाती है।

अर्जेंटाइट, जाइराजाइट, हार्न सिल्वर चांदी के मुख्य अयस्क है।

चांदी सीसे व जस्ते के साथ निकलती है।

चांदी अयस्क का शोधन ढुंडु(बिहार) में होता है।

सोना

बांसवाड़ा – आन्नदपुर भुकिया, जगपुर, तिमारन माता, संजेला, मानपुर, डगोचा

उदयपुर – रायपुर, खेड़न, लई

चित्तौड़गढ़ – खेड़ा गांव

डुंगरपुर – चादर की पाल, आमजरा

दौसा – बासडी, नाभावानी

आंनदपुर भुकिया और जगपुरा में सोने का खनन हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है।

हाल ही में अजमेर, अलवर, दौसा, सवाईमाधोपुर में स्वर्ण के नये भण्डार मिले हैं।

यूरेनियम

यूरेनियम एक आण्विक खनिज है। पैगमेटाइट्स, मोनोजाइट और चैरेलाइट इसके मुख्य अयस्क है।

उदयपुर – ऊमरा(सर्वाधिक)

टोंक – देवली

सीकर – खण्डेला, रोहिल

बूंदी – हिण्डोली

भीलवाड़ा – जहाजपुर, भूणास

नये भण्डार – डूंगरपुर, किशनगढ़, बांसवाड़ा

कोयला

राजस्थान में टर्शरी युग का लिग्नाइट किस्म का कोयला मिलता है।

कोयले के भण्डारों की दृष्टि से तमिलनाडु के बाद राजस्थान का दुसरा स्थान है।

राजस्थान में कोयले का सर्वाधिक भण्डार वाला जिला व उत्पादन में बाड़मेर का प्रथम स्थान है।

बाड़मेर – कपूरडी, जलिया, गिरल, कसनऊ, गुढा

बीकानेर – पलाना, बरसिंहसर, चानेरी, बिथनौक, पानेरी, गंगा-सरोवर

नागौर – सोनारी, मेड़तारोड़, इंगियार[10,11,12]

प्राकृतिक गैस

राजस्थान में सबसे पहला भण्डार जैसलमेर के घोटारू में मिला।

जैसलमेर – घोटारू(मीथेन + हीलियम) मनिहारी टिब्बा(प्राकृतिक गैस) डांडेवाला, तनोट, गमनेवाला, रामगढ़, कमलीवाल

जैसलमेर के रामगढ़ में गैस आधारित बिजलीघर स्थापित किया गया है।

राजस्थान में विभिन्न कंपनियां प्राकृतिक गैस की खोज कर रही है।

SHELL INTERNATIONAL – बाड़मेर सांचोर

PHOENIX OVERSEAS – शाहगढ़

ERROR OIL – बीकानेर नागौर

RELIANCE PERTOLIUM – बाघेवाला

खनिज तेल

खनिज तेल अवसादी शैलों में मिलता है।

राजस्थान में सर्वाधिक तेल भण्डार बाड़मेर में है।

बाड़मेर – गुढामलानी, कोसलु, सिणधरी, मग्गा की ढाणी, हाथी की ढाणी

अन्य उत्पादक जिले

जैसलमेर – साधेवाला, तनोट, मनिहारी टिब्बा, देवाल

बीकानेर – बाघेवाला, तुवरीवाला

हनुमानगढ़ – नानूवाला

बाड़मेर के जोगसरिया गांव में ब्रिटेन की केयर्न एनर्जी कंपनी द्वारा खोजे गये तेल कूप को केन्द्रीय पेट्रोलियम मंत्रालय ने मंगला प्रथम म दिया।

मंगला प्रथम से 1.5 कि.मी. की दुरी पर खोदे गये दुसरे कुएं को 26 जनवरी 2004 को मंगला-2 नाम दिया गया।

मंगला, एंश्वर्या, सरस्वती, विजया, भाग्यम, राजेश्वरी, कामेश्वरी, गुढा, बाड़मेर-सांचोर बेसिन के तेल क्षेत्र है।

गुढामलानी तहसील के पास नागर गांव और मामियों की ढाणी में केयर्न एनर्जी कंपनी को तेल के भण्डार मिले है।

नागर गांव के निकट खोदे गये कूप को राजेश्वरी नाम दिया गया है। यह मंगला प्रथम से 75 कि.मी. दुर है।

गुढामानी तहसील के झण्ड गांव में तीसरे कुएं की खुदाई की जा रही है।

मंगला के बाद बाड़मेर में मिले तेल भण्डारों को विजया व भाग्यन के रूप में 4 अप्रैल 2005 को लोकार्पण किया गया।

गंगानगर के बींझबायला और हनुमानगढ़ के नानुवाला में फरवरी 2004 को एस्सार ऑयल ने पेट्रोलियम भण्डार की पुष्टि की।

बीकानेर के बाघेवाला ब्लॉक में देवी ऑयल के भण्डार मिले हैं।

इस भण्डार को OICL और वेनेजुएला की एक कम्पनी मिलकर दोहन करेगी।

ओ. आई. सी. एल. बाघेवाला में मिनी रिफाइनरी व उर्वरक संयंत्र लगाने की योजना बना रही है।

राजस्थान में ओ. एन. जी. सी. और आई. ओ. सी. मिलकर बाड़मेर में तेल रिफाइनरी लगाने की योजना बना रही है।

मूंदड़ा(कच्छ) से भटिण्डा के बीच निर्माणाधीन कच्चे तेल की पाइपलाइन बाड़मेर, जोधपुर, नागौर, बीकानेर, हनुमानगढ़, गंगानगर से गुजरेगी। जोधपुर में इसका

पम्पिंग स्टेशन बनाया गया है।

जामनगर – लोनी एल. पी. जी. गैस पाइप लाइन जी. ए. आई. एल. ने बिछाई है। जो कांदला(जामनगर, गुजरात) से होते हुए लोनी उतरप्रदेश तक जायेगी।

इसके लिए आबुरोड(सिरोही) व गोदरी गांव(अजमेर) में बूस्टर लगाये हैं। इससे अजमेर व जयपुर मे एल. पी. जी. की आपूर्ती होगी।

हजीरा(गुजरात), बीजापुर(मध्यप्रदेश), जगदीशपुर(उतरप्रदेश) एच. बी. जे. गैस पाइप लाइन से अन्ता(बांरा) के गैस विधुत ग्रह और गडेपान (कोटा) के उर्वरक संयंत्र व सिमकोट ग्लास फेक्ट्री(कोटा) को गैस आपूर्ती होती है।

जयपुर के निकट राजावास गांव में एल. पी. जी. के लिए विश्व की सबसे लंबी पाइप लाइन लगाई जा रही है।

## II. विचार-विमर्श

अधात्विक खनिज:-

1 एस्बेस्टॉस:- उपयोग - सीमेंट के पाईप, चादर, टाईल्स आदि बनाने में।

अ उदयपुर - ऋषभदेव, सलूमबर, खेरवाड़ा

ब राजसमन्द

स डूंगरपुर

द अजमेर

2 वोलस्टोनाइट:- उत्पादन में राजस्थान का एकाधिकार (100%)

उपयोग - सिरेमिक उद्योग, कागज उद्योग, रबड़ उद्योग में।

अ सिरौही - बेटका व खील्ला

ब अजमेर - रूपनगढ़

स उदयपुर - खेड़ा

द डूंगरपुर - बोकड़िया

3 फेल्सपार :-

अ अजमेर - मकरेड़ा

ब भीलवाड़ा - माण्डल

4 बाल क्ले/बीकानेर क्ले/फायर क्ले/मुल्तानी मीट्टी[13,14,15]

अ बीकानेर

5 चीनी मिट्टी :-

अ सवाई माधोपुर - वसुरायसीन

ब सीकर - टोरडा, बुचरा

स अलवर - बसवागेट

द धौलपुर उदयपुर व जालोर

6 काँच बालुका/सिलिका सेण्ड:- राजस्थान का उत्तरप्रदेश के बाद दुसरा स्थान है।

अ जयपुर - सांगोद, झर

ब बूंदी - बरोदीया

7 जास्फर - जोधपुर

8 कैल्साइट - सीकर

9 बेराइट्स :- विश्व में भारत का दुसरा स्थान है तथा भारत में आंध्रप्रदेश प्रथम स्थान पर है

अ अलवर - राजगढ़

ब उदयपुर - जगत व रेलपातलिया

स राजसमन्द - देलवाड़ा

द जयपुर अजमेर बाड़मेर भरतपुर

10 बेंटोनाइट-

अ बाड़मेर - हाथी की ढाणी व गीरल

ब सवाईमाधोपुर - दरगावन

रासायनिक खनिज

1 चुना पत्थर/लाइम स्टोन :-

अ सीमेंट ग्रेड - चित्तौड़गढ़

ब केमिकल ग्रेड - नागौर व जोधपुर

स स्टील ग्रेड - सोनू जैसलमेर

2 फ्लोराइट/फ्लोरस्पाः-

- अ डूंगरपुर - मांडो की पाल व काहीला
- ब जालोर - भीनमाल व करार
- स सीकर - छापोली व चौकड़ी

3 ग्रेनाइट :- जालोर को ग्रेनाइट सिटी कहा जाता है।

- अ गुलाबी ग्रेनाइट - जालोर
- ब काल ग्रेनाइट - कालाडेरा (जयपुर)
- स पिला ग्रेनाइट - जैसलमेर

4 बलुआ पत्थर:- सर्वाधिक उत्पादन - जोधपुर

- अ लाल पत्थर- जोधपुर धौलपुर व करौली
- ब काला पत्थर - डूंगरपुर व बांसवाड़ा
- स पिला पत्थर - जैसलमेर

5 कोटा स्टोन - कोटा

6 स्लेट पत्थर - अलवर

7 घिया पत्थर / सोपस्टोन:-

- अ भीलवाड़ा - घेवरिया व चांदपुर
- ब दौसा - डागोथा- झारना

ईंधन खनिज

1 कोयला :- राजस्थान में टॉर्शियरी काल का लिग्नाइट कोयला पाया जाता है।

- अ बाड़मेर - गीरल जालिप्पा व कपुरडी
- ब बिकानेर - बरसिंहसर पलाना गुढा खारी बिथनोक
- स नागौर - कसनऊ इग्यार मातासुख मेड़ता रोड भोकला

2 पेट्रोलियम:- राजस्थान में पेट्रोलियम के चार बेसिन है।

- अ बाड़मेर- साँचोर बेसीन
- ब जैसलमेर बेसीन
- स बीकानेर - नागौर बेसीन
- द विन्ध्यन बेसीन

इनमे से पहले तीन बेसीन को भारत सरकार के हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय ने प्रथम श्रेणी की सूचि में शामिल किया है । जिनमे अन्वेषण व उत्पादन का कार्य किया जा सकता है।

3 यूरेनियम:-

- अ उदयपुर - उमरा
- ब सीकर - रोहिल

बहुमूल्य पत्थर

1 तामड़ा/गारनेट/लालमणी/रक्तमणि/फिरोजा:-

राजस्थान में इसकी दो किस्मे जैम व अब्रोसिव पाई जाती है।

जैम गार्नेट के उत्पादन में राजस्थान का एकाधिकार हैं।

- अ टोंक - राजमहल व जनकपुरा
- ब अजमेर - सरवाड़ व खरखरी
- स भीलवाड़ा -कमालपुरा
- द सीकर - बागेश्वर व महवा

2 पन्ना/हरि अग्नि/ मरकत/एमरल्ड/तक्षर्य

- अ राजसमन्द - कालागुमान व टिककी



ब उदयपुर - गोगुन्दा व गढबीर

3 हीरा :- वर्तमान में बाड़मेर में भी हीरे के भण्डार खोजे गए है।

अ प्रतापगढ़ - केशरपुरा व मानपुरा

इमरती पत्थर

1 संगमरमर:- मकराना नागौर का संगमरमर विश्वप्रसिद्ध है जिसका प्रयोग आगरा के ताजमहल वह कोलकाता के विक्टोरिया महल में किया गया है।

सफेद संगमरमर - नागौर अजमेर राजसमन्द

हरा संगमरमर - उदयपुर

कला संगमरमर - भैसलाना जयपुर

पिला संगमरमर - जैसलमेर

लाल संगमरमर - धौलपुर

बादामी संगमरमर - जोधपुर

सात रंग का संगमरमर - खान्दरा पाली

गुलाबी संगमरमर - बाबरमल उदयपुर

राजस्थान में तेल की खोज का कार्य 1954 में शुरू हुआ था लेकिन उल्लेखनीय प्रगति 1999 के पश्चात स्कॉटलैंड की कंपनी केयर्न एनर्जी के प्रयासों से मिली।

बाड़मेर के मंगला ऑयल फील्ड से 29 अगस्त 2009 को पहली बार तेल का उत्पादन हुआ।

राजस्थान में अब तक 21 तेल ब्लॉकों का आवंटन किया गया है जिनमें से बाड़मेर सांचौर बेसिन की मंगला भाग्यम ऐश्वर्या कामेश्वरी रागेश्वरी शक्ति सरस्वती विज्या आदि हैं

जैसलमेर बेसिन में मनिहारी टिब्बा चीनी वाला टिब्बा कमली ताल घोटारू तनोट मोहनगढ़ रामगढ़ डाण्डे वाला सादे वाला बाघे वाला आदि हैं जिनमें प्राकृतिक गैस के भंडार पाए गए हैं।

वर्तमान में बीकानेर नागौर बेसिन में पूनम ऑयल फील्ड की खोज की गई है खनिज तेल के उत्पादन में राजस्थान का वर्तमान में प्रथम स्थान है

### III. परिणाम

(अ) पेट्रोलियम-

- भंडारण- 4 बेसिन एवं 14 जिलों में है। जैसे-
- (A) बाड़मेर सांचौर बेसिन- 2 जिले (सांचौर, बाड़मेर)- सर्वाधिक भंडारण व उत्पादन
- (B) जैसलमेर बेसिन या राजस्थान शेल्फ बेसिन- 1 जिला (जैसलमेर)
- (C) बीकानेर नागौर बेसिन- 5 जिले (श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर, चूरू, नागौर)
- (D) विन्ध्यन बेसिन- 6 जिले (कोटा, बारा, बूंदी, झालावाड़, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़)
- उत्पादन-
- जिला- स्थान (बेसिन)
- (A) बाड़मेर- नागाना (मंगला), कोसलू (सरस्वती), बायतू (ऐश्वर्या), गुढ़ा मालानी (रागेश्वरी)
- मंगला राजस्थान का पहला पेट्रोलियम कुआं है जो 29 अगस्त, 2009 में स्थापित किया गया।
- बाड़मेर के अन्य पेट्रोलियम कुएं-
- (I) भाग्यम[12,13,14]
- (II) विजया
- (III) कामेश्वरी
- (IV) शक्ति
- (V) दुर्गा
- (B) जैसलमेर- बाघेवाला (PDVSA- वेनेजुएला की कंपनी), साधेवाला, तनोट, चिन्नेवाला
- (C) बीकानेर-
- (I) तुवरीवाला- बीकानेर
- (II) पूनम क्षेत्र- बीकानेर (खोज- OIL-Oil India Ltd द्वारा, उत्पादन क्षमता- 30000 बैरल प्रतिदिन)
- 1 बैरल = 159 लीटर

विशेष-

- भारत में सर्वाधिक पेट्रोलियम उत्पादन-
- 1. अपतटीय क्षेत्र (बॉम्बेहाई- 40 %)
- 2. राजस्थान- 20%
- 3. गुजरात
- 4. असम
- राजस्थान में सर्वाधिक पेट्रोलियम उत्पादन-
- 1. केयर्न एनर्जी (वर्तमान वेदांता द्वारा किया जाता है।)
- राजस्थान में पेट्रोलियम का सर्वाधिक उत्पादन- केन एनर्जी

पेट्रोलियम या क्रूड ऑयल के उपयोग-

- (I) पेट्रोल, डीजल, कैरोसीन या मिट्टी का तेल प्राप्त करने में उपयोगी।
- (II) पेट्रोल रासायनिक उद्योगों में उपयोगी।
- (III) सड़क निर्माण में उपयोगी।
- (IV) रंग उद्योग में उपयोगी।

(ब) प्राकृतिक गैस-

- भंडारण- जैसलमेर (प्रथम)
- उत्पादन-
- 1. बाड़मेर (प्रथम स्थान)- गुद्धा मालानी (रागैश्वरी)
- 2. जैसलमेर (दूसरा स्थान)- डांडेवाला, गुमानेवाला, रामगढ़, तनोट, मनिहारी टिब्बा, घोटारू
- प्राकृतिक गैस का प्रथम कुआं- घोटारू (जैसलमेर)

(स) कोयला-

- निर्माणकाल के आधार पर कोयला-
- निर्माणकाल के आधार पर कोयला 2 प्रकार का होता है। जैसे-
- 1. गौडवानालैंड काल या कार्बोनीफेरस काल (Carboniferous Age)- भारत में 98%
- 2. टर्शियरी काल- भारत में 2%, राजस्थान में 100%
- राजस्थान में केवल टर्शियरी काल का कोयला है।
- कार्बन प्रतिशत या मात्रा के अनुसार कोयले की श्रेणियां या प्रकार- 4 प्रकार जैसे-
- कोयला- कार्बन की मात्रा
- A- एन्थ्रासाइट- 95% (काला व चमकीला)
- B- बिटुमीनस 60-70% (काला-भूरा) (भारत में सर्वाधिक पाया जाता है।)
- L- लिग्नाइट 50-60% (भूरा) (राजस्थान में सर्वाधिक पाया जाता है।)
- P- पीट 50% से कम (हल्का भूरा)

कोयले के उत्पान क्षेत्र-

- 1. बाड़मेर (प्रथम स्थान)- कपुरड़ी, जालीपा, गिरल, भादरेस
- 2. बीकानेर (दूसरा स्थान)- बीठनोक, बरसिंगसर, पलाना, गुद्धा या गुरहा
- 3. नागौर (तीसरा स्थान)- मेड़ता सिटी, मातासुख-कसनाऊ क्षेत्र, ईग्यार क्षेत्र

कोयले के उपयोग-

- (I) तापीय ऊर्जा के उत्पादन में उपयोगी।
- (II) अंगीठी में उपयोगी।
- (III) रेलवे ईंधन बनाने में उपयोगी।
- (IV) इस्त्री या प्रेस में उपयोगी।

(E) राजस्थान में खनिज नीतियां (Mineral Policies in Rajasthan)-

- राजस्थान में तीन प्रकार की खनिज नीतियां हैं। जैसे-
- (अ) सामान्य खनिज नीति
- (ब) एम-सैंड नीति

• (स) मार्बल एवं ग्रेनाईट नीति

(अ) सामान्य खनिज नीति-

उद्देश्य- खनिज आधारित नवीनतम उद्योगों को आदिवासी व पिछड़े क्षेत्रों में स्थापित किया जायेगा। सामान्य खनिज नीति में किये गये प्रावधान निम्न है-

1. खनिजों का वैज्ञानिक विदोहन करना।
  2. 31 प्रधान खनिज व गौण खनिज के लिए खनन पट्टे न्यूनतम चार हेक्टेयर पर जारी किये जायेंगे।
  3. सैंड स्टोन खनन पट्टे न्यूनतम एक हेक्टेयर पर जारी किये जायेंगे।
  4. बजरी खनन पट्टे न्यूनतम 5 हेक्टेयर व अधिक 50 हेक्टेयर पर जारी किये जायेंगे।
  5. अवैध खनन करने पर 5 साल की सजा व 5 लाख रुपये का जुर्माना होगा।
  6. लॉटरी वाले खनिजों का लॉक इन पीरियड 1 वर्ष का रखा गया है।
  7. खनन लाइसेंस की अवधि को 15 वर्ष से बढ़ाकर 30 वर्ष किया गया है।
  8. वैध खनन क्षेत्रों में विवादों को सुलझाने के लिए सेटलमेंट कमेटी का गठन किया जायेगा।
  9. नवीनतम खनिज नीति में मिनरल्स डायरेक्टरी का प्रावधान रखा गया है। जिसमें खनिजों के भंडारण एवं उत्पादन क्षेत्रों को दर्शाया जायेगा।
  10. राज्य की जीडीपी में खनिज के योगदान को बढ़ाना।
- राजस्थान में अब तक कुल 5 सामान्य खनिज नीतियां जारी की जा चुकी है। जैसे-
1. पहली खनिज नीति- 1978
  2. दूसरी खनिज नीति- 1991
  3. तीसरी खनिज नीति- 1994
  4. चौथी खनिज नीति- 2011
  5. पाँचवी खनिज नीति- 4 जून, 2015

(ब) एम-सेंड नीति (मैन्यूफैक्चर्ड सेंड नीति)-

- एम सेंड अर्थात् यह कृत्रिम रेत है जिसे खनिजों (पत्थर) को पीसकर बनाया जाता है। जो IS Code मानक 383 : 2016 द्वारा निर्धारित होता है।
- एम सेंड को ग्रेनाईट से प्राप्त किया जायेगा।
- एम सेंड का उपयोग सरकारी भवनों के निर्माण में 25% अनिवार्य किया गया है। जिसे 50% तक बढ़ाया जा सकता है।
- राजस्थान में अब तक एक एम सेंड नीति जारी की जा चुकी है। जैसे-
- राजस्थान में पहली एम सेंड नीति 25 जनवरी 2021 को जारी की गई है।
- उद्देश्य-
- खदानों से उत्पन्न अपशिष्ट की समस्या का समाधान करना अर्थात् खदानों से निकलने वाले अपशिष्ट का उचित उपयोग करना।
- नदियों से उत्पादित बजरी पर निर्भरता को कम करना।
- बजरी का सस्ता एवं सुगम विकल्प उपलब्ध करवाना।
- खनिज आधारित उद्योगों व स्थानीय स्तर पर रोजगार की संभावना बढ़ाना।
- पर्यावरण को संरक्षित करना तथा पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार करना।

(स) मार्बल एवं ग्रेनाईट नीति-

- राजस्थान में अब तक एक मार्बल एवं ग्रेनाईट नीति जारी की जा चुकी है। जैसे-
- राजस्थान की पहली मार्बल एवं ग्रेनाईट नीति- 2002
- विजन 2020- यह खनिज क्षेत्र में 15 अगस्त, 1999 को जारी किया गया था।
- मार्बल एवं ग्रेनाईट नीति में किये गये प्रावधान निम्न है।-
- खनिजों का वैज्ञानिक या सतत् पोषणीय विदोहन।
- खनन क्षेत्र में आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना।
- जीडीपी में खनिज के योगदान को बढ़ाना।

(F) राजस्थान में खनिज संस्थान (Minerals Institutes in Rajasthan)-

1. RSMML
2. हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड
3. हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड
4. HPCL पेट्रोलियम रिफाइनरी

1. RSMML-

- RSMML Full Form = Rajasthan State Mines and Minerals Ltd.
- RSMML का पूरा नाम = राजस्थान राज्य खान एवं खनिज निगम
- स्थापना- 1974[14,15]
- मुख्यालय- उदयपुर

2. हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड-

- स्थापना- 1966
- मुख्यालय- देबारी (उदयपुर)
- जिंक स्मेल्टर प्लांट की स्थापना 2005 में चंदेरिया (चित्तौड़गढ़) में की गई थी।

3. हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड-

- स्थापना- 1967
- मुख्यालय- खेतड़ी (झुंझुनू जिला, राजस्थान)

4. हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड की परियोजनाएं-

- (I) खेतड़ी कॉपर प्रोजेक्ट- झुंझुनू
- (II) चांदमारी कॉपर प्रोजेक्ट- झुंझुनू
- (III) खो-दरीबा कॉपर प्रोजेक्ट- अलवर

#### IV. निष्कर्ष

HPCL पेट्रोलियम रिफाइनरी-

- HPCL- हिन्दूस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड
- स्थान- पचपदरा (पचपदरा में निर्माणाधीन)
- बजट- 43129 करोड़
- सहयोग- HPCL : राजस्थान सरकार = 74% : 26%
- क्षमता- 9 MMTPA (Million Metric Tons Per Annum/ 9मिलियम मैट्रिक टन प्रतिवर्ष)
- विशेषताएं-
- (I) यह राजस्थान की पहली पेट्रोलियम रिफाइनरी है।
- (II) यह भारत की 26वीं पेट्रोलियम रिफाइनरी है।
- (III) इस रिफाइनरी का मानक BS-VI (Bharat Stage-VI) होगा।
- (IV) रिफाइनरी के साथ पेट्रो-केमिकल कॉम्प्लेक्स की स्थापना भी की जाएगी।[15]

#### संदर्भ

1. PTI (1 September 2019). "Kalraj Mishra is new governor of Rajasthan, Arif Mohd Khan gets Kerala | India News - Times of India". The Times of India (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 1 September 2019.
2. ↑ "Rajasthan Profile" (PDF). Census of India. मूल से 16 September 2016 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 21 July 2016.
3. ↑ "MOSPI Net State Domestic Product, Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India". अभिगमन तिथि 7 April 2020.
4. ↑ "Report of the Commissioner for linguistic minorities: 52nd report (July 2014 to June 2015)" (PDF). Commissioner for Linguistic Minorities, Ministry of Minority Affairs, Government of India. पृष्ठ 34-35. मूल (PDF) से 28 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 16 फ़रवरी 2016.
5. ↑ "Sub-national HDI – Area Database – Global Data Lab". hdi.globaldatalab.org (अंग्रेज़ी में). मूल से 23 September 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 September 2018.
6. ↑ "Census 2011 (Final Data) – Demographic details, Literate Population (Total, Rural & Urban)" (PDF). planningcommission.gov.in. Planning Commission, Government of India. मूल से 27 January 2018 को पुरालेखित (PDF). अभिगमन तिथि 3 October 2018.
7. ↑ सक्सेना, हरमोहन (2014). राजस्थान अध्ययन. जयपुर: राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मंडल जयपुर. पृष्ठ 3.
8. ↑ Jat, Madan; Jat (2018). Madan. Jat.



9. ↑ {{cite book |title=Archaeological Survey Of India Four Reports Made During The Years 1862 |date=1871 |pages=242-248|url=https://books.google.com/books?id=3s4OAAAAQAAJ |last1=Cunningham |first1=Sir Alexander
10. ↑ Kohli, Anju; Shah, Farida; Chowdhary, A. P. (1997). Sustainable Development in Tribal and Backward Areas (अंग्रेज़ी में). Indus Publishing. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-7387-072-9.
11. ↑ गोपीनाथ शर्मा / 'Social Life in Medieval Rajasthan' / पृष्ठ ३
12. ↑ शर्मा, गोपीनाथ (1971). राजस्थान का इतिहास. आगरा: शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी. पृ० 7.
13. ↑ <http://hindi.mapsofindia.com/rajasthan/jaipur/places-of-interest/> Archived 2016-09-19 at the वेबैक मशीन जयपुर के दर्शनीय स्थल
14. ↑ [1] बेरोजगार सेवा केन्द्र सीकर
15. ↑ "राजस्थान जनरल नॉलेज". akresult.com.



INTERNATIONAL  
STANDARD  
SERIAL  
NUMBER  
INDIA



# International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | [ijarase@gmail.com](mailto:ijarase@gmail.com) |

[www.ijarase.com](http://www.ijarase.com)